भारत-यू.के. संबंधों के बदलते स्वरूप

लेखक - कृष्णन श्रीनिवासन (पूर्व विदेश सचिव)

यह आलेख सामान्य अध्ययन प्रश्न पत्र-II (अंतर्राष्ट्रीय संबंध) से संबंधित है।

द हिन्दू

06 जनवरी, 2021

दोनों देशों का साझा अतीत है और इसलिए इन दोनों को एक अलग साझा भविष्य के निर्माण पर बल देना चाहिए।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कई आश्चर्यजनक निर्णय लिए हैं, जिनमें से कुछ लाभकारी है और कुछ विनाशकारी। इनके पूर्व के निर्णयों में दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन के नेताओं को अपने 2014 के शपथ ग्रहण समारोह में बुलाना, 2015 में लाहौर की इनकी यात्रा; इसके बाद विमुद्रीकरण का फैसला और पिछले फरवरी में 'नमस्ते ट्रम्प' आयोजन शामिल हैं। अभी हाल ही में इन्होनें फिर से सब को आश्चर्यचकित करने वाला फैसला लिया है, जिसमें इन्होनें ब्रिटिश प्रधानमंत्री बोरिस जॉनसन को गणतंत्र दिवस के मौके पर निमंत्रण दिया है। हालाँकि, U.K. में COVID-19 उत्परिवर्तन (mutations) के कारण, वे इस महीने भारत के गणतंत्र दिवस परेड में शामिल नहीं हो सकेंगे। श्री जॉनसन का विवादास्पद चरित्र देखने को मिलता रहा है, इन्हें अक्सर ब्रिटिश मीडिया एक जोकर के रूप में चित्रित करती आई है, लेकिन कोई भी इनकी पैंतरेबाजी और सत्ता में रहने की उनकी क्षमता पर संदेह नहीं कर सकता है।

मुख्य अतिथि का चयन

गणतंत्र दिवस परेड के लिए मुख्य अतिथि का नामांकन प्रधानमंत्री का विशेष उपहार माना जाता है। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प जनवरी 2019 के लिए श्री मोदी की पहली पसंद थे, लेकिन अंत में श्री ट्रम्प ने इनकार कर दिया था। श्री मोदी के चयन पर एक नजर:- इन्होनें 2015 में अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा, 2016 में फ्रांस के राष्ट्रपति फ्रांस्वा ओलांद, 2017 में संयुक्त अरब अमीरात के क्राउन प्रिंस, 2018 में आसियान नेता, 2019 में दक्षिण अफ्रीका के राष्ट्रपति सिरिल रामफोसा, 2020 में ब्राजील के राष्ट्रपति श्री बोल्सनारो और 2021 के लिए श्री जॉनसन को निमंत्रण दिया है। संयुक्त राष्ट्र के 193 देशों में से, प्रधानमंत्री की पसंद ज्यादातर पश्चिमी देशों के नेता रहे हैं। इसके अलावा, छह बार ब्रिटेन को इस तरह का निमंत्रण दिया जा चुका है, जो किसी भी अन्य राष्ट्र से अधिक है।

भारत का ब्रिटेन के साथ एक साझा अतीत है और इसे एक अलग साझा भविष्य का निर्माण करने की आवश्यकता है, क्योंकि अब ब्रिटेन ने यूरोपीय संघ (EU) को छोड़ दिया है। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में ब्रिटेन एक स्थायी सदस्य है और भारत इस साल और अगले साल एक गैर-स्थायी सदस्य के रूप में शामिल है। और इस वर्ष, श्री जॉनसन G-7 और संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन सम्मेलन की मेजबानी करेंगे जिसमें भारत एक आमंत्रित देश है।

श्री मोदी के हाल के निमंत्रणों में श्री बोल्सनारो, श्री ट्रम्प और श्री जॉनसन शामिल हैं, जिनके बीच बहुत कुछ समान है। इन सभी देशों को वायरस के कारण भारी क्षति का सामना करना पड़ा है है और उनमें से प्रत्येक COVID -19 से संक्रमित भी है। ये सभी लोकलुभावन राष्ट्रवादी हैं जो 'मेक माय कंट्री ग्रेट अगेन (make my country great again) और माय कंट्री फर्स्ट (my country first) जैसे विचारों की वकालत कर रहे हैं। उनकी लोकतांत्रिक राजनीति का ब्रांड आत्म-केंद्रित है और आलोचना के लिए अभेद्य है।

श्री जॉनसन ने 2016 में ब्रेक्जिट अभियान के तहत ब्रिटिश राष्ट्रीय राजनीति के लिए खुद को शामिल किया और अपने पूर्ववर्ती प्रधानमंत्री थेरेसा मे के खिलाफ विद्रोह का नेतृत्व किया, जिन्होंने संघर्ष-मुक्त ब्रेक्जिट का वादा किया था। विदित हो कि श्री मोदी ने 2015 में यू.के. का दौरा किया जहाँ छह बड़े समझौते हुए।

एक आकस्मिक निमंत्रण

ब्रिटेन के दृष्टिकोण से, श्री मोदी का अपने प्रधानमंत्री के लिए निमंत्रण आकस्मिक था, क्योंकि ब्रिटेन अब चाहेगा कि उच्च विकास दर वाले एशियाई देशों में वाणिज्यिक लाभ लेने के लिए हर संभव प्रयास किया जाए। भारत 2007 से यूरोपीय संघ के साथ व्यापार समझौते पर फल-फूल रहा है, जिसके दौरान ब्रिटेन को एक अवरोधक के रूप में देखा जाता था। यूरोपीय संघ ऑटो, वाइन और स्पिरिट पर शुल्क में कटौती चाहता था और यह भी चाहता था कि भारत बैंकिंग और बीमा, डाक, कानूनी, लेखा, समुद्री एवं सुरक्षा और खुदरा जैसे वित्तीय क्षेत्र खोले। भारत ने हमेशा की तरह, सेवा पेशेवरों के लिए मुफ्त आवागमन की मांग की थी।

दोनों देशों का निर्यात प्रोफाइल मुख्य रूप से सेवा-उन्मुख है। पेशेवरों के लिए मुक्त आवागमन के जवाब में, ब्रिटेन अप्रवासियों के लिए अपनी नई अंक-आधारित प्रणाली का उल्लेख करेगा, जबकि क्षेत्रीय व्यापक आर्थिक भागीदारी से हटने के बाद, भारत किसी भी नए व्यापार समझौते पर बातचीत करते समय सतर्क रहेगा। इसलिए, जब ब्रिटेन के साथ समझौते का समय आता है, तो दोनों देश सीमित संख्या में फार्मास्यूटिकल्स, वित्तीय प्रौद्योगिकी, रसायन, रक्षा उत्पादन, पेट्रोलियम और खाद्य उत्पादों पर अपना ध्यान केन्द्रित कर सकते हैं।

घनिष्ठ संबंध

ब्रिटेन में भारतीय मूल के डेढ़ लाख लोग निवास करते हैं, जिनमें से 15 संसद सदस्य, तीन कैबिनेट और दो वित्त और गृह मंत्री के रूप में उच्च पद पर हैं। COVID-19 से पहले, भारत से ब्रिटेन में प्रतिवर्ष आधे मिलियन पर्यटक जाते थे और यही आंकड़ा ब्रिटेन के संदर्भ में दोगुना है। पोस्ट-ग्रेजुएशन के बाद रोजगार के लिए प्रतिबंधात्मक अवसरों के बावजूद ब्रिटेन में लगभग 30,000 भारतीय अध्ययन करते हैं। ब्रिटेन भारत में शीर्ष निवेशकों में से है और भारत ब्रिटेन में दूसरा सबसे बड़ा निवेशक और एक प्रमुख रोजगार निर्माता है। कुल 16 बिलियन डॉलर के व्यापार में भारत का क्रेडिट बैलेंस है, लेकिन यह स्तर स्विट्जरलैंड, जर्मनी या बेल्जियम के साथ भारत के व्यापार से नीचे है।

संभावित प्रश्न (प्रारंभिक परीक्षा)

प्र. भारत-ब्रिटेन संबंधों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:-

1. ब्रिटेन के संसद में भारतीय मूल के 15 सदस्य हैं।
2. वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार, ब्रिटेन में भारतीय मूल के लगभग 1.5 मिलियन लोगों की आबादी है।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सत्य है/हैं?

(a) केवल 2 **(b)** केवल 1

(c) 1 और 2 दोनों **(d)** न तो 1, न ही 2

Expected Questions (Prelims Exams)

Q. Consider the following statements in the context of India-UK relations:-

1. The UK Parliament has 15 Members of Parliament of Indian origin.
2. According to the 2011 census, the UK has a population of about 1.5 million people of Indian origin.

Which of the above statements is / are correct?

(a) Only 2 **(b)** Only 1

(c) Both 1 and 2 **(d)** Neither 1 nor 2

संभावित प्रश्न (मुख्य परीक्षा)

प्र. भारत-ब्रिटेन संबंधों में व्याप्त अवसरों और चुनौतियों पर चर्चा करते हुए बताएं कि ब्रेक्जिट का भारत-ब्रिटेन संबंधों पर क्या प्रभाव पड़ेगा? (250 शब्द)

Q. While discussing the opportunities and challenges in Indo-UK relations, what will be the impact of Brexit on Indo-UK relations? (250 Words)

Committed To Excellence

नोट :- अभ्यास के लिए दिया गया मुख्य परीक्षा का प्रश्न आगामी UPSC मुख्य परीक्षा को ध्यान में रख कर बनाया गया है। अतः इस प्रश्न का उत्तर लिखने के लिए आप इस आलेख के साथ-साथ इस टॉपिक से संबंधित अन्य स्त्रोतों का भी सहयोग ले सकते हैं।